

राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019-20

10वीं कक्षा

तृतीय भाषा-संस्कृतम्

मॉडल पेपर-चतुर्थ

समय : 3.15 घंटे

(पूर्णांक : 80)

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रे निर्धारितस्थाने नामांकः अनिवार्यतो लेखनीयः।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि उत्तरपुस्तिकायामेव लेखनीयानि।
4. एकस्य प्रश्नस्य सर्वेषां खण्डानामुत्तराणि एकत्र एव लेखनीयानि।
5. सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृत-माध्यमेन एव लेखनीयानि।

1. अधोलिखितस्य गद्यांशस्य सप्रसंगं हिन्दीभाषया अनुवादं करोतु- 5
पितुः प्रयाणात् प्रागेव विपन्नतायां श्रेष्ठिगृहेषु गोधूमादि-पेषणं पात्रमार्जनम् इत्येवमादिभिः कार्यैः यथाकथञ्चित् काल-यापनं कुर्वती अस्य बालस्य वराकी माता इदानीं वैधव्य-कारणाद् इतोऽपि विपदाभिभूता अभवत्, उच्यते हि- 'छिद्रेष्वनर्थाः बहुलीभवन्ति।' इदानीं मातुः सहयोगाय बीरमा-बालकेन गोचारणकार्यमारब्धम्। तदानीन्तनः दीन-हीनः ग्रामीणः कृषकवर्गः श्रमिकवर्गश्च सामन्तानां, राज्ञां (नवाब-संज्ञकानां वा), वैदेशिकानां च शासकानां त्रिविधे दासता-पञ्चरे आबद्धः आसीत्। रौरव-नरकप्रायं हि तेषां जीवनमासीत्। अयं पुनः 'गण्डस्योपरि पिटकः' संवृतः यत् भयं करो दुर्भिक्षकालः समापन्नः। 'छप्पनियाँ अकाल' इति कुख्याते वि. सं. 1956 तमस्य तस्मिन् दारुणे दुर्भिक्षे प्राणधारणमपि दुर्भरमासीत्। चतुर्दिक्षु जलं नैव, अन्नं नैव, तृणं नैव। आसीत् केवलं क्षुत्पिपासयोः अखण्डं साम्राज्यं, प्राणिनामार्तनादश्च। शमीवृक्षाणां त्वचं भरुट-संज्ञकं घासं च खादित्वा मनुष्याः यथाकथञ्चित् प्राणान् रक्षितवन्तः। पशवः प्रायः काल-कवलिताः। एतौ मातापुत्रौ अपि जनपदात् जनपदं ग्रामात् ग्रामं च अटन्तौ आस्ताम्। अस्मिन्नेवान्तरे सततं दुर्भिक्ष-प्रतारणैः जर्जरिता बलवदस्वस्था च बीरमा-जनन्यपि षोडशवर्षदेशीयम् इमं किशोरम् एकलं विहाय दिवं प्रयाता।

उत्तरम् :

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'स्पन्दना' के कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस अंश में केशवानन्द के अत्यन्त दयनीय एवं विपत्तिग्रस्त बाल्यकाल का तथा उस समय के दासतापूर्ण जीवन का वर्णन किया गया है। साथ ही इस अंश में 'छप्पनियाँ अकाल' के नाम से कुख्यात भयंकर अकालग्रस्त जीवन का भी चित्रण किया गया है।

हिन्दी अनुवाद- पिता की मृत्यु होने के पहले से ही दरिद्रता के कारण सेठों के घरों में गेहूँ, जौ आदि को पीसकर, बर्तन माँजना आदि कार्यों से जैसे-तैसे समय व्यतीत करती हुई इस बालक की बेचारी माता अब विधवा होने के कारण और भी अधिक विपत्तिग्रस्त हो गई थी, जैसा कि कहा भी गया है- 'परेशानी में समस्याएँ बढ़ जाती हैं।' इस समय बीरमा

बालक ने गाय चराने का काम प्रारम्भ किया। उस समय के दिन-हीन ग्रामीण किसान लोग और श्रमिक वर्ग (मजदूर वर्ग) सामन्तों, राजाओं और विदेशी शासकों के तीन प्रकार के गुलामी रूपी पिंजरे में बंधे हुए थे। रौरव नामक नरक के समान ही उनका प्रायः जीवन था। फिर से यह 'फोड़े के ऊपर फुंसी' जैसा हो गया था कि भयंकर अकाल आ गया था। 'छप्पनियाँ अकाल' नाम से कुख्यात विक्रम संवत् 1956 के उस भीषण अकाल में प्राण धारण करना भी दूबर था। चारों दिशाओं में न तो पानी था, न ही अन्न था और न ही घास (चारा)। केवल भूख और प्यास का अखण्ड साम्राज्य तथा प्राणियों की चीख-पुकार थी। खेजड़ी के पेड़ों की छाल और भरुट नामक घास को खाकर मनुष्य जैसे-तैसे प्राणों की रक्षा कर रहे थे। प्रायः पशु तो मृत्यु के ग्रास बन चुके थे। ये माता-पुत्र भी नगर-नगर और गाँव-गाँव भटक रहे थे। इसी बीच में निरन्तर अकाल की पीड़ाओं से क्षीण और अत्यन्त अस्वस्थ बीरमा की माता भी लगभग सोलह वर्ष के इस युवक को अकेला छोड़कर स्वर्गलोक को चली गई।

अथवा

1. अधोलिखितस्य गद्यांशस्य सप्रसंगं हिन्दीभाषया अनुवादं करोतु- 5
प्रतापस्य राज्यकाले 'अकबर' इति नामकः मुगलशासकः आसीत्। अकबरस्य सेनया सह प्रतापस्य अनेकवारं युद्धम् अभवत्। मुख्ययुद्धं हल्दीघाटीस्थाने अभवत्, अतएव एतत् 'हल्दीघाटीयुद्धम्' इति नाम्ना प्रसिद्धमस्ति। अस्मिन् युद्धे प्रतापः 'चेतक' इति नामके अश्वे आरुह्य बहुशौर्यं प्रदर्शितवान्। प्रतापस्य सेना पर्वतीययुद्धेषु कुशला आसीत्। अतएव मुगलसेनायाः अतिक्रान्तिः जाता। मुगलसेना स्थानीयजनानां विरोधकारणेन परावर्तिता। अस्मिन् युद्धे प्रतापस्य राज्येऽपि जनक्षतिः धनक्षतिश्च संजाताः। तस्य सेनाऽपि धनाभावे विघटिता। परं प्रतापः कदापि पराजयं न स्वीकृतवान्। अरण्यगुहाप्रदेशेषु उषित्वा स्वसंकल्पसिद्धये सैन्यसंग्रहणम् उपाक्रमत। सैन्यसंग्रहणं तत्प्रशिक्षणं च बहुवित्तसाध्यं कार्यम्। महता दारिद्र्येण परितप्यमानस्य प्रतापस्य इदमेव बहुचिन्ताकारणमासीत्।

उत्तरम् :

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'स्पन्दना' के 'महाराणा-प्रतापः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस अंश में अकबर के साथ महाराणा प्रताप के हुए सुप्रसिद्ध हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन है। इसमें प्रताप की वीरता एवं देशभक्ति को दर्शाया गया है।

हिन्दी अनुवाद- प्रताप के राज्य-काल में 'अकबर' नामक मुगल-शासक था। अकबर की सेना के साथ प्रताप का अनेक बार युद्ध हुआ। मुख्य युद्ध 'हल्दी-घाटी' नामक स्थान पर हुआ था, इसलिए यह 'हल्दीघाटी का युद्ध' नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में प्रताप ने 'चेतक' नामक घोड़े पर सवार होकर अत्यधिक पराक्रम को दिखलाया। प्रताप की सेना पर्वतीय युद्धों में कुशल थी। इसलिए मुगल-सेना की अत्यधिक हानि हुई। मुगल-सेना स्थानीय लोगों के विरोध के कारण से लौट गई। इस युद्ध में प्रताप के राज्य में भी जन-हानि और धन-हानि हुई। उसकी सेना भी धन के अभाव में बिखर गई। किन्तु प्रताप ने कभी भी पराजय को स्वीकार नहीं किया। वन और गुफा के क्षेत्रों में रहकर अपने संकल्प की सिद्धि के लिए सेना का संग्रह किया। सेना का संग्रह और उसका प्रशिक्षण अत्यधिक धन से ही किया जा सकता था। अत्यन्त दरिद्रता से पीड़ित हुए प्रताप की चिन्ता का यही प्रमुख कारण था।

2. अधोलिखितस्य पद्यांशस्य सप्रसंगं हिन्दीभाषया अनुवादं करोतु- 5
पितृभूत्वं पुण्यभूत्वं द्वयं यस्य न विद्यते।
तस्य स्वत्वं तत्र राष्ट्रे भवितुं न किलार्हति।।

उत्तरम् :

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'स्पन्दना' के 'स्वराष्ट्र-गौरवम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में राष्ट्र के प्रति अपनत्व-भाव किस प्रकार होता है, इसके बारे में बतलाते हुए कवि कहता है कि-
हिन्दी अनुवाद- जिसका जहाँ पैतृक-भाव और पुण्य-भाव दोनों नहीं होते हैं, उसका उस राष्ट्र में अपनत्व का भाव भी नहीं हो सकता है अर्थात् राष्ट्र के प्रति अपनत्व का भाव पैतृक भाव एवं पुण्यत्व से उत्पन्न होता है।

अथवा

2. अधोलिखितस्य पद्यांशस्य सप्रसंगं हिन्दीभाषया अनुवादं करोतु- 5
भोजनान्ते च किं पेयं, जयन्तः कस्य वै सुतः।
कथं विष्णुपदं प्रोक्तं, तत्रं शक्रस्य दुर्लभम्।।

उत्तरम् :

प्रसंग- प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'स्पन्दना' के 'वाक्केलिः' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस श्लोक में एक पहेली है, जिसमें प्रारम्भ के तीन चरणों में तीन प्रश्न हैं तथा चतुर्थ चरण में तीन पदों में उनके क्रमशः उत्तर हैं-

हिन्दी-अनुवाद- प्रस्तुत पहेली के प्रथम तीन चरणों में तीन प्रश्न तथा चतुर्थ चरण में उनके उत्तर इस प्रकार हैं-

प्रश्न

उत्तर

- | | |
|--------------------------------------|------------|
| 1. भोजन के अन्त में क्या पीना चाहिए? | छाछ। |
| 2. जयन्त किसका पुत्र है? | इन्द्र का। |
| 3. विष्णु का पद कैसा कहा गया है? | दुर्लभ। |
3. अधोलिखितस्य पद्यांशस्य सप्रसङ्गं संस्कृतव्याख्यां करोतु- 4
आसीना भव मानस-हंसे
कुन्द-तुहिन-शशि-धवले!
हर जडतां कुरु बोधि-विकासं

सित-पंकज-तनु-विमले!।।

उत्तरम् :

प्रसङ्ग- प्रस्तुतपद्यम् अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'जय सुरभारति!' इति शीर्षकपाठाद् उद्धृतम्। मूलतः पाठोऽयं कविपुंगवेन डॉ. हरिरामाचार्येण विरचितायाः सरस्वती वन्दनायाः संकलितः। अस्मिन् पद्ये कविः सरस्वतीवन्दनां कुर्वन् कथयति यत्-

संस्कृत-व्याख्या- हे कुन्द-हिम-चन्द्रवत् शुभ्रे। 'मानस' सरोवरस्ये हंसे, मम मनोरूपिणे हंसे वा उपविष्टा भव। श्वेतकमल-वत् रमया पवित्रा च हे सरस्वति! मम मन्दतां दूरीकुरु, ज्ञानस्य विकासं च कुरु।
विशेषः- अत्र कविना विविधोपमानैः सरस्वत्याः धवलस्वरूपस्य वर्णनं कृत्वा मन्दतां दूरीकृत्य ज्ञानप्राप्तये कामना कृता।

अथवा

3. अधोलिखितस्य पद्यांशस्य सप्रसङ्गं संस्कृतव्याख्यां करोतु- 4
मानं मनीषिता मैत्री मरुदृष्णं मरीचिका।
मृगाः मूध्नि मनुष्याणाम् उष्णीषं प्रमुखम्मरौ।

उत्तरम् :

प्रसङ्ग- प्रस्तुतश्लोकः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'मरुसौन्दर्यम्' इति शीर्षकपाठाद् उद्धृतः। अस्मिन् श्लोके मरुप्रदेशस्य वैशिष्ट्यस्य तत्र प्राप्तमानमित्रतादीनाञ्च वर्णनं कृतम्।

संस्कृत-व्याख्या- सम्मानः, विद्वत्ता, मित्रता, उष्णवायुः, मृगतृष्णा, हरिणाः, मानवानां मस्तके शिरोवेष्टनम् ('पगड़ी' इति)-एतत् सर्वमपि मरुदेशे प्रमुखरूपेण दृश्यते।

विशेषः- अत्र कविना मरुप्रदेशस्य वैशिष्ट्यं दर्शितम्। तत्र मान-विद्वत्ता-मित्रतादयः सर्वे गुणाः सौन्दर्यसाधनानि च सन्ति।

4. अधोलिखितस्य नाट्यांशस्य सप्रसंगं संस्कृत-व्याख्यां करोतु- 3
बालः - मातः! रोचते मे एष भद्रमयूरः। (इति क्रीडनकामादत्ते)
प्रथमा - (विलोक्य, सोद्वेगम्) अहो, रक्षाकरण्डकमस्य मणिबन्धे न दृश्यते।

राजा - अलमावेगेन। नन्विदमस्य सिंहशावकविमर्दात् परिभ्रष्टम्। (इत्यादातुमिच्छति)

उभे - मा खल्वेतदवलम्ब्य! कथं? गृहीतमनेन? (इति विस्मयाद् परस्परमवलोकयतः।)

उत्तरम् :

प्रसङ्ग- प्रस्तुतनाट्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दनायाः' 'जृम्भस्व सिंह! दन्तांस्ते गणयिष्ये' इति शीर्षकपाठाद् उद्धृतः। मूलतः पाठोऽयम् 'अभिज्ञानशाकुन्तलस्य' सप्तमांकात् संकलितः। अंशेऽस्मिन् सिंहशावकेन सह क्रीडारतस्य बालकस्य परिचयं विषये नृपस्य तापसः च वार्तालापं वर्णितम्-

संस्कृत-व्याख्या-

बालकः - मातः! मह्यम् अयम् रम्यमयूरः रोचते। (इति कथयित्वा क्रीडनकं मृण्मयूरं गृह्णाति)।

प्रथमा तापसी - (दृष्ट्वा, उद्वेगपूर्वकम्) अहो, रक्षार्थम् अभिमन्त्रितम् औषधि-सूत्रम् अस्य मणिबन्धे नहि दृश्यते।

राजा - आवेगं मा कुरु। इदं रक्षासूत्रम् अस्य सिंहशिशुघर्षणात् पतितम्। (इति कथयित्वा रक्षासूत्रम् उत्थापयितुमिच्छति)

उभे - निश्चयेन इदं रक्षासूत्रं न गृह्णातु! कथम्? अनेन तु गृहीतमेव? (एवं प्रकारेण ते आश्चर्याद् मिथः पश्यतः)

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

अथवा

4. अधोलिखितस्य नाट्यांशस्य सप्रसंगं संस्कृत-व्याख्यां करोतु- 3
भामाशाहः - महाराज! यदा इमान् समाचारान् अशृण्वम् तदा हृदयं मे भग्नम् इव अभवत् (धनग्रन्थिं निर्दिश्य) इयं पुनः सम्पत्तिः कस्मै प्रयोजनाय? यदि ईदृशे एव अवसरे न इयम् उपयुज्येत!

प्रतापः - भवान् सत्यं वदति।

भामाशाहः - यदि एवं, गृह्यतां भवदीया सम्पत्तिः श्रीमता एव। त्रोट्यतां पारतन्त्र्य-शृंखला एभिः लोहमय-बाहुभिः! स्वतन्त्रः क्रियतां स्वदेशः!! सुरक्ष्यतां धर्मः!!! (धनस्य ग्रन्थिकां चरणयोः अर्पयति सप्रणामम्)

उत्तरम् :

प्रसङ्गः- प्रस्तुतनाट्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दनायाः' 'स्वदेशं कथं रक्षेयम्' इति शीर्षकपाठाद् उद्धृतः। पाठोऽयं डॉ. नारायणशास्त्री कांकरेण विरचिता एकांकी वर्तते। अकबरेण सह युद्धं कुर्वन् प्रतापः अटव्यामटन् धनाभावे सैन्यशक्त्याभावे च खिन्नः भूत्वा स्वदेशं परित्यक्तुं समुद्यतः भवति। प्रतापस्य तां खिन्नावस्थां दृष्ट्वा मेवाड़मन्त्री भामाशाहः तत्रागत्य स्वकीयां विपुलां धनराशिं देशस्य स्वतन्त्रतायै प्रतापं समर्पयति। प्रतापश्च पुनः स्वतन्त्रतायै योद्धुम् दृढप्रतिज्ञां करोतीति वृत्तान्तं अत्र वर्णितम्।

संस्कृत-व्याख्या-

भामाशाहः - हे महाराज! यदा अहम् एतद् वृत्तान्तम् आकर्णितवान्, तदा मम चेतः खण्डितः इव जातः। (धनराशिं निर्दिष्टं कृत्वा) यदि एतादृशे काले अस्याः धनसम्पदः उपयोगं न क्रियते, तर्हि अस्याः सम्पदः कोऽपि लाभः नास्ति।

प्रतापः - भवान् समीचीनं कथयति।

भामाशाहः - चेद् इत्थं वर्तते तर्हि श्रीमान्! स्वस्य धनसम्पत्तिः स्वीकरोतु। स्वस्य लोहसदृशैः भुजाभिः पराधीनतायाः बन्धनं भग्नं करोतु। स्वस्य राष्ट्रं स्वतन्त्रं करोतु। धर्मस्य संरक्षणं क्रियताम्। (इत्युक्त्वा भामाशाहः प्रणामपूर्वकं धनराशिग्रन्थिं प्रतापस्य पादयोः समर्पयति।)

विशेषः - अत्र भामाशाहस्य उदारता, विनम्रता, देशभक्तिः, स्वामिभक्तिश्च प्रकटिता जाता।

5. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु केषांचन षट् प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतमाध्यमेन लिखतु- 3

1. किं देशं हिन्दुस्थानं कथ्यते?
2. के जनाः धन्याः सन्ति?
3. चित्रग्रीवः कपोतान् किम् अवबोधयत्?
4. काव्येषु किं रम्यम्?
5. सुरभारती कीदृशी धवला?
6. 'लोकहितं मम करणीयम्' इति गीतं केन रचितम्?
7. केभ्यः न प्रमदितव्यम्?
8. पञ्चतन्त्रस्य कति तन्त्राणि, तेषां नामानि लिखत?

उत्तरम् :

1. हिमालयात् आरभ्य इन्दुसागर पर्यन्तं देशं हिन्दुस्थानं कथ्यते।
2. ये जनाः भारतवर्षे जन्म लभन्ते ते धन्याः सन्ति।
3. कपोताः! कुतोऽत्र निर्जने वने तण्डुलकणानां सम्भवः? तन्निरूप्यतां तावत् भद्रमिदं न पश्यामि।
4. काव्येषु नाटकं रम्यम्।
5. सुरभारती कुन्द-तुहिन-शशि इव धवला।
6. 'लोकहितं मम करणीयम्' इति गीतं डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर

महोदयेन रचितम्।

7. स्वाध्याय-सत्य-धर्म-कुशल-भूति, प्रवचन देव-पितृ कार्येभ्यः न प्रमदितव्यम्।
8. पञ्चतन्त्रस्य पञ्चतन्त्राणि सन्ति, तेषां नामानि-
 (क) मित्रभेदः
 (ख) मित्रसम्प्राप्तिः
 (ग) काकोलूकीयम्
 (घ) लब्धप्रणाशः
 (ङ) अपरीक्षितकारकम् च इति।

निर्देशः- प्रश्न संख्या 6-9 पर्यन्तं रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं करोतु-

6. वीरगत्या मरणं कल्याणकरं। 1
उत्तरम् :
 कया मरणं कल्याणकरं?
7. अनवद्यानि कर्माणि सेवितव्यानि। 1
उत्तरम् :
 कीदृशानि कर्माणि सेवितव्यानि?
8. सः मुगलसाम्राजस्य उपरि प्रत्यक्षं प्रहारम् अकरोत्। 1
उत्तरम् :
 स कस्य उपरि प्रत्यक्षं प्रहारम् अकरोत्?
9. सर्वदमनः दुष्यन्तस्य पुत्रः आसीत्। 1
उत्तरम् :
 सर्वदमनः कस्य पुत्रः आसीत्?
10. प्रश्नपत्रादतिरिच्य स्वपाठ्यपुस्तकात् श्लोकद्वयं लिखतु- 3
उत्तरम् :
 1. गोपालसाङ्गिकः कृष्णः रामो वानरसाङ्गिकः।
 सद्भिः सुसाङ्गिको बुद्धः महात्मानो हि साङ्गिकः॥
 2. पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
 मूढैः पाषाण-खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥
11. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखतु-
 मानव-जीवने श्रमस्य महत्त्वं सर्वे जनाः जानन्ति। मानवः श्रममाश्रित्यैव सुखसमृद्धिं प्राप्नोति। जनः सुखं वाञ्छति, मनोरथं पूरयितुमभिलषति, जीवने समुन्नतिं कांक्षते, तत्सर्वस्य साधनं श्रममेव वर्तते। श्रम एव मानवस्य स्वाभिमानं शारीरिक-शक्तिं च प्रसारयति, सर्वेषु कार्येषु तस्य दक्षतामापादयति। अतएव श्रमेणैव सर्वत्र साफल्यं मिलति।
 जनैः सदा सः श्रमः कर्तव्यः यतः सम्पत्तेरुद्भवो भवति, यतोहि व्यर्थं परिश्रमं कुर्वन् नरः पापभाक् भवति। प्रज्ञाः तुर्येऽपि वयसि परमं श्रमं न त्यजेयुः। यस्मिन् देशे जनाः पूर्णश्रमपरायणाः भवन्ति, तत्र वसुन्धराः धनैर्धान्यैः पूर्णा विराजते। धिषणाश्रमसंयोगः सर्वकार्येषु सिद्धिदः भवति। अश्रमा धिषणा व्यर्था भवति तथा च अधिषणः श्रमः व्यर्थः भवति। अतएव स्वस्य लोकस्य चोन्नतये सदैव श्रमः कर्तव्यः।
 1. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। 1
 2. यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरतु-
 (क) मानवजीवने कस्य महत्त्वं सर्वे जनाः जानन्ति? 1
 (ख) केनैव सर्वत्र साफल्यं मिलति? 1
 (ग) मानवः कथं सुखसमृद्धिं प्राप्नोति? 1
 (घ) श्रम एव मानवस्य किम् प्रसारयति? 1

- (ङ) किम् कुर्वन् नरः पापभाक् भवति? 1
3. यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरतु-
- (क) "जनः सुखं वाञ्छति" -इत्यत्र कर्तृपदं किम्? 1
- (ख) अस्मिन् गद्यांशे 'त्यजेयुः' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् प्रयुक्तम्? 1
- (ग) 'व्यर्थं परिश्रमम्' इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्? 1
- (घ) प्रस्तुतगद्यांशे 'धिषणः' इत्यस्य विलोमपदं किम् प्रयुक्तम्? 1

उत्तरम् :

1. श्रमस्य महत्त्वम्।
2. (क) श्रमस्य।
(ख) श्रमेणैव।
(ग) मानवः श्रममाश्रित्यैव सुखसमुद्भिं प्राप्नोति।
(घ) श्रम एव मानवस्य स्वाभिमानं शारीरिकशक्तिं च प्रसारयति।
(ङ) व्यर्थं परिश्रमं कुर्वन् नरः पापभाक् भवति।
3. (क) जनः।
(ख) प्रज्ञाः।
(ग) व्यर्थम्।
(घ) अधिषणः।

12. अधोलिखितपदयोः सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखतु।

1. गायकः 1
2. अद्यैव 1

उत्तरम् :

1. गै + अकः (अयादि सन्धि)
2. अद्य + एव (वृद्धि सन्धि)

13. अधोलिखितपदयोः सन्धिं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखतु।

1. नगरम् + गतः 1
2. इतः + ततः 1

उत्तरम् :

1. नगरगतः (अनुस्वार सन्धि)
2. इतस्ततः (विसर्ग सन्धि)

14. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकित समस्तपदानां विग्रहं अथवा विग्रहपदानां समासं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत-

1. महान् राजा विराटः आज्ञापयति। 1
2. अहम् उपगङ्गाम् एव वसामि। 1
3. रामश्च कृष्णश्च समागतौ। 1

उत्तरम् :

1. महाराजः, कर्मधारयसमासः।
2. गङ्गायाः समीपे, अव्ययीभावसमासः।
3. रामकृष्णौ, द्वन्द्वसमासः।

15. निम्नलिखितवाक्येषु रेखांकितपदेषु प्रयुक्तविभक्तिं तत् कारणं च लिखत-

1. सा तस्मै भोजनं ददाति। 1
2. तेन सह अहम् अपि पठिष्यामि। 1
3. राजपुरुषात् चौरः पलायते। 1

उत्तरम् :

1. चतुर्थी विभक्तिः, 'दा' (दानार्थे) धातुयोगे।
2. तृतीया-विभक्तिः, 'सह' योगे।
3. पञ्चमी-विभक्तिः, पृथक्योगे।

16. कोष्ठकेषु प्रदत्त-प्रकृतिप्रत्ययानुसारं शब्दनिर्माणं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु।

1. नालन्दा स्थानम् अस्ति। (दृश् + अनीयर्) 1
2. सागरस्य मापनीयं न अस्ति। (गहन् + त्व) 1

उत्तरम् :

1. दर्शनीयम्।
2. गहनत्वं।

17. अधोलिखितवाक्ययोः रेखांकितपदेषु प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथक्कृत्वा लिखतु।

1. नैतिकी शिक्षा आवश्यकी 1
2. गुणी एव सर्वत्र पूज्यः। 1

उत्तरम् :

1. नीति + ठक् + डीप्
2. गुण् + इन् + अनीयर्

18. मंजूषायां प्रदत्तैः अव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु-

किमर्थम्, पुरा, शनैः, विना

1. सः अरण्ये रोदिति? 1
2. एकः राजा आसीत्। 1
3. कच्छपः चलति। 1

उत्तरम् :

1. सः किमर्थम् अरण्ये रोदिति?
2. पुरा एकः राजा आसीत्।
3. कच्छपः शनैः चलति।

निर्देशः- प्रश्नसंख्या 19-21 पर्यन्तं अधोलिखितवाक्यानां वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखतु-

19. मम मित्रं फलं खादति। 1

उत्तरम् :

मम मित्रेण फलं खाद्यते।

20. तेन दुग्धं पीयताम्। 1

उत्तरम् :

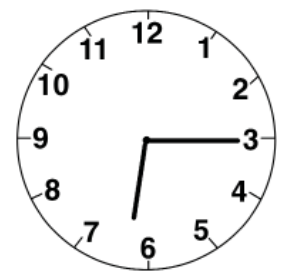
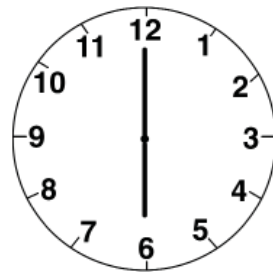
सः दुग्धं पिबतु।

21. रामः क्रदन्ति। 1

उत्तरम् :

रामेण क्रन्द्यते।

22. घटिकाचित्रं सहायतया अंकानां स्थाने संस्कृतशब्देषु समयलेखनं करोतु-



1. बालकः वादने शयनं त्यजति। 1
2. सः वादने स्नानाय गच्छति। 1

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

उत्तरम् :

1. बालकः षड्-वादने शयनं त्यजति।
 2. सः सपादषड्-वादने स्नानाय गच्छति।
23. अधोलिखितं वाक्यत्रयं शुद्धं कृत्वा लिखतु-
1. सहस्राः जनाः धावन्ति। 1
 2. अयं बालिका पुस्तकं पठति। 1
 3. जलं मधुरा अस्ति। 1

उत्तरम् :

1. सहस्रः जनाः धावन्ति।
 2. इयं बालिका पुस्तकं पठति।
 3. जलं मधुरम् अस्ति।
24. ज्येष्ठभ्रातुः विवाहकारणात् दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना पत्रं लिखतु। 4

उत्तरम् :

सेवायाम्
श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः,
जयपुरम्।
विषय- दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना-पत्रम्।
महोदयाः,
सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् मम ज्येष्ठभ्रातुः पाणिग्रहणसंस्कारः
15.04.20.... दिनांके निश्चितः। एतत् कारणात् दिनद्वयं यावद् अहं
स्वकक्षायामुपस्थातुं न शक्नोमि।
अतः निवेदनमस्ति यत् 15.04.20.... दिनांकतः 16.04.20....
दिनांकपर्यन्तं दिनद्वयस्य अवकाशं स्वीकृत्य माम् अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।
सधन्यवादम्।
दिनांक : 14.04.20.... भवदीयः शिष्यः
श्यामः शर्मा

अथवा

24. मित्रं प्रति परीक्षासफलतायां लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तैः शब्दैः
पूर्यत। 4

मञ्जूषा- परीक्षाभवनात्, सन्तोषः, अंकान्, साधुवादान्,
कामये, प्राप्तम्, प्रिय मित्र, सप्रेमनमस्कारम्।

.....
दिनांक : 25.03.20....

.....!

.....!

भवतः परीक्षासफलतापत्रम् अधुनैव। भवतः उत्तीर्णतां ज्ञात्वा
मयि अति अस्ति। अहोरात्रं प्रयासं विधाय भवान् 95 प्रतिशतम्
..... लब्धवान्। त्वं मम परिवारजनस्य अर्हसि। पत्रसमाप्तौ
तुभ्यं पुनः वर्धापनम्। पितृभ्यां सादरं नमः।

भवतः प्रियमित्रम्

अ ब स

उत्तरम् :

परीक्षाभवनात्
दिनांक : 25.03.20....

प्रिय मित्र!

सप्रेमनमस्कारम्।

भवतः परीक्षासफलतापत्रम् अधुनैव प्राप्तम्। भवतः उत्तीर्णतां ज्ञात्वा मयि
अति सन्तोषः अस्ति। अहोरात्रं प्रयासं विधाय भवान् 95 प्रतिशतम्
अंकान् लब्धवान्। त्वं मम परिवारजनस्य साधुवादान् अर्हसि। पत्रसमाप्तौ
तुभ्यं पुनः वर्धापनम् कामये। पितृभ्यां सादरं नमः।

भवतः प्रियमित्रम्

अ ब स

25. मञ्जूषातः उचितानि पदानि चित्वा संवादं पूर्यत 4

दिल्लीनगरस्य, छात्रः, आगतः, आगच्छतु, पाटलिपुत्रात्,
इतिहासस्य, ऐतिहासिक-स्थलानाम्, रुचिः।

प्रथमः - भवान् कुतः आगतः ?

द्वितीयः - अहम् अमेरिका-देशात्

प्रथमः - किं भवान् ?

द्वितीयः - आम्, दिल्ली-विश्वविद्यालये छात्रः अहम्। भारतस्य
इतिहासे मे महती

प्रथमः- आः शोभनम्। अहम् अत्र आगतः। श्वः
दर्शनाय गमिष्यामि।

द्वितीयः - दिल्लीनगरस्य दर्शनाय मम उत्सुकता अस्ति।

प्रथमः - तर्हि दिल्लीदर्शनाय मया सह भवान्।

द्वितीयः - बाढम्।

उत्तरम् :

प्रथमः - भवान् कुतः आगतः ?

द्वितीयः - अहम् अमेरिका-देशात् आगतः।

प्रथमः - किं छात्रः भवान् ?

द्वितीयः - आम्, दिल्ली-विश्वविद्यालये इतिहासस्य छात्रः अहम्।
भारतस्य इतिहासे मे महती रुचिः।

प्रथमः- आः शोभनम्। अहम् अत्र पाटलिपुत्रात् आगतः। श्वः
दिल्लीनगरस्य दर्शनाय गमिष्यामि।

द्वितीयः - दिल्लीनगरस्य ऐतिहासिक-स्थलानां दर्शनाय मम उत्सुकता
अस्ति।

प्रथमः - तर्हि दिल्लीदर्शनाय मया सह आगच्छतु भवान्।

द्वितीयः - बाढम्।

26. अधोलिखितषड्वाक्येषु केषांचन चतुर्णां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं
करोतु- 4

1. फूल खिलते हैं।

2. दो लड़की नाचती हैं।

3. उसे पत्र लिखना चाहिए।

4. उसे पढ़ना चाहिए।

5. मुनि वन में रहते थे।

6. राम दशरथ के पुत्र थे।

उत्तरम् :

1. पुष्पाणि विकसन्ति।

2. बालिके नृत्यतः।

3. सः पत्रं लिखेत्।

4. सः पठेत्।

5. मुनयः वने अनिवसन्।

6. रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

27. अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृते षट्

वाक्यानि रचयतु-



मञ्जूषा- चतुष्पथेषु, तीव्रगत्या, असावधानतया, यातायातस्य नियमानाम्, नियन्त्रणभावेन, सड़कदुर्घटनायाः।

उत्तरम् :

1. इदं चित्रं सड़कदुर्घटनायाः वर्तते।
2. तीव्रतया वाहनचालनेन दुर्घटना भवति।
3. वाहनस्य समुचितनियन्त्रणभावेन दुर्घटना भवति।
4. चतुष्पथेषु सावधानतया गन्तव्यम्।
5. सड़कसुरक्षार्थं यातायातस्य नियमानां पालनं कर्तव्यम्।
6. असावधानतया कदापि वाहनं न चालयेत्।

अथवा

27. अधोलिखितम् अनुच्छेदं मञ्जूषायाः सहायतया पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायाम् लिखतु- 3

मञ्जूषा- कुर्यात्, भ्रमणम्, शारीरिक-व्यायामाः, शरीरे, प्रसन्नम्, व्यायामशीलः, व्यायामेन, सुस्वास्थ्यम्

शरीरं स्वस्थं रक्षितुं व्यायामः अनिवार्यः अस्ति। शरीरं सबलं नीरोगं च जायते। नरः साहसी भवति। प्राणायामः,

3

धावनम्, योगाभ्यासः मल्लयुद्धम् इति विविधाः सन्ति। यः व्यायामं करोति तस्य रक्त-सञ्चारः सम्यक्-रूपेण भवति। स्फूर्तिः अपि जायते। यदि इच्छेत्, तर्हि नियमपूर्वकं व्यायामं। यदि शरीरम् स्वस्थं तर्हि चित्तं अपि इति सर्वसम्मतम्।

उत्तरम् :

शरीरं स्वस्थं रक्षितुं व्यायामः अनिवार्यः अस्ति। व्यायामेन शरीरं सबलं नीरोगं च जायते। व्यायामशीलः नरः साहसी भवति। प्राणायामः, भ्रमणम् धावनम्, योगाभ्यासः मल्लयुद्धम् इति विविधाः शारीरिक-व्यायामाः सन्ति। यः व्यायामं करोति तस्य शरीरे रक्त-सञ्चारः सम्यक्-रूपेण भवति। स्फूर्तिः अपि जायते। यदि सुस्वास्थ्यम् इच्छेत्, तर्हि नियमपूर्वकं व्यायामं कुर्यात्। यदि शरीरम् स्वस्थं तर्हि चित्तं अपि प्रसन्नम् इति सर्वसम्मतम्।

28. अधोलिखितवाक्यानि क्रमरहितानि सन्ति। यथाक्रमं संयोजनं कृत्वा लिखतु। 3

1. बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा।
2. शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्। यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्।
3. स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्।
4. व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रः भयाकुलचित्तो नष्टः।
5. अस्ति देउलाख्यो ग्रामः, तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। तस्य भार्या बुद्धिमती पितुर्गृहं प्रति चलिता।
6. मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श।

उत्तरम् :

1. अस्ति देउलाख्यो ग्रामः, तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। तस्य भार्या बुद्धिमती पितुर्गृहं प्रति चलिता।
2. मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श।
3. व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रः भयाकुलचित्तो नष्टः।
4. स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्।
5. शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्। यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्।
6. बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा।

सत्र 2020-21 से नये पाठ्यक्रमानुसार सभी कक्षाओं के सभी विषयों की टेक्स्ट बुक एवं सभी प्रकार की सहायक अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को मोबाइल पर व्हाट्सएप द्वारा एवं वेबसाइट www.rbse.online पर उपलब्ध करवायी जाएगी। इसके लिये विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसके लिये विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का कोई OTP Verification या Email द्वारा Verification नहीं देना होगा। हमारा व्हाट्सएप नम्बर जानने या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये वेबसाइट www.rbse.online पर विजिट करें।

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।